अङ्क-२६
जुलाई-दिसम्बर २०१५

वेदविद्या
ISSN-2230-8962

'तसव्वुफ़ (सूफ़िमत) का अध्ययन वैदिक दर्शन के सन्दर्भ में'

डॉ. वाहिद नसरू

विद्वानों ने मुस्लिम रहस्यवाद[१] की व्याख्या के लिए सूफ़ी शब्द का प्रयोग किया है। इस्लाम के गूढ़ रहस्यवाद को सूफ़ीमत तथा रहस्यवादियों को सूफ़ी नाम की संज्ञा प्राप्त है। रहस्यवादी सूफ़ियों के दर्शन को तसव्वुफ़ कहा जाता है।[२] सूफ़ीमत की परिभाषा करते हुए जुनैद बगदादी (मृत्यु सन् ८८५ ई.) ने कहा है की, 'तसव्वुफ़' ईश्वर द्वारा पुरुष में व्यकित्त्व की समाहिति और ईश्वर तत्त्व की उद्बुद्धि का नाम है।[३] अल्लामा शिबली ने ईश्वर के अतिरक्त अखिल विश्व के त्याग को 'तसव्वुफ़' कहा है।[४] मन्सूर-व-हल्लाज (मृत्यु सन् ९२२ ई.) ने सर्वात्मवाद वेदान्त दर्शन के अद्धैत सिद्धान्त को तसव्वुफ़ कहा है।[५] 'सर्वात्मवाद' का अर्थ है, प्रकृति की समस्त वस्तुओं तथा शक्तियों में आत्माओं के अस्तित्व से सम्बन्धित विश्वास का सिद्धान्त।

सूफ़ीमत का विकास और उद्भव तत्कालीन धार्मिक और राजनीतिक वातावरण की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप हुआ था, जिसको तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है।

प्रथम चरण - हजरत मौहम्मद के निधन के दो सौ वर्षों के पश्चात् सातवीं शताब्दी में सूफ़ी मत का जन्म हुआ। सातवीं शताब्दी का समय कुरान शरीफ़ एवं हदीसों पर भाष्यों और विवृत्तियों की रचना का

---

१ रहस्यवाद के लिए अंग्रेजी भाषा में 'मिस्टिसिज्म' शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'मिस्टिसिज्म' शद की व्युत्पत्ति यूनानी भाषा के 'म्यो' शब्द से होती है, जिसका अर्थ है, 'मौन रहना' इस व्युत्पत्ति के आधार पर कहा जा सकता है कि रहस्यवादी जो विशेष अनुभव प्राप्त करता है, उसकी अभिव्यक्ति में असमर्थ होने के कारण वह इसके सम्बन्ध में केवल मौन ही रह सकता है। रहस्यवाद बहुत ही अस्पष्ट तथा विवादास्पद विषय है, अतः इसकी कोई सर्वसम्मत एवं निश्चित परिभाषा देना बहुत ही कठिन है। सभी रहस्यवादी विद्वानों का यह मत है कि, रहस्यवाद मनुष्य के सामान्य अनुभव से पूर्णतः भिन्न है और उसकी परिधि से परे है। अर्थात् जो विषय मनुष्य की परिधि से बाहर है उसके सम्बन्ध में हम निश्चयपूर्वक कोई भी परिभाषा नहीं दे सकते है। रहस्यवादी अपने जीवन में ऐसे अनुभव प्राप्त किया करते हैं जो सांसारिक अनुभव से नितान्त भिन्न हैं, और इसी कारण जिसे 'रहस्यात्मक अनुभव' कहा जा सकता है। रहस्यवाद वह स्थिति है जिसमें पहुँच कर मनुष्य मौन रहने के अतिरिक्त और कुछ कर ही नहीं सकता, क्योंकि वह भाषा के माध्यम से वह अभिव्यक्त नहीं कर सकता।

२ प्रधान सम्पादक, धीरेन्द्र वर्मा, सन् १९६३ ई., 'हिन्दी साहित्य कोश' भाग प्रथम, द्वितीय संस्करण ज्ञानमण्डल लि. वाराणसी, पृ. ९३६।

३ सूफ़ीमत और हिन्दी साहित्य, पृ. ४ ।

४ सूफ़ीमत और हिन्दी साहित्य, पृ. ६ ।

५ हिन्दी के सूफ़ी प्रेमाख्यान, पृ. ३ ।

समय था।[1] सूफ़ीमत इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों पर आधारित था। इस्लाम एक प्रवृत्तिमूलक धर्म है। इस कारण विकास के प्रथम चरण में सूफ़ीमत में दर्शन का प्रवेश नहीं था। यह समय आत्म चिन्तन और आत्म शुद्धीकरण का समय था। जिक्र और तापसी जीवन का समय था।[2] अपने विकास के प्रथम चरण में सूफ़ीमत और इस्लाम में कोई किसी प्रकार का भेद नहीं माना जाता था।

द्वितीय चरण - सूफ़ीमत के विकास के द्वितीय चरण में सूफ़ियों की दिनचर्या व मनोवृत्ति में परिवर्तन होना प्रारम्भ हो गया। कारण यह था कि अब्बासी वंश के मुस्लिम शासकों ने दमिश्क को छोडकर बगदाद को अपनी नई राजधानी बनाया था। बगदाद उस समय सम्पूर्ण विश्व की साहित्य की राजधानी थी। अब्बासी बादशाह मामू ने और उनके मन्त्री बरमक ने भारत देश से वेदान्त और बौद्धमत के दार्शनिकों और सन्तों को अपने राजदरबार में एकत्रित किया था। इन दार्शनिकों की विचार धारा का प्रभाव सूफ़ियों पर पड़ा था। हिन्दुमत और बौद्धमत के तर्क वितर्क से सूफ़ीमत में ऐसे तथ्यों का भी समावेश हो गया, जो इस्लाम के मूल सिद्धान्तों के अनुकूल नहीं समझा जाता था।[3] इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों से प्रसूत सूफ़ीमत (तसव्वुफ़) पर भी प्राचीन भारतीय दर्शनों का पूर्णतः प्रभाव पड़ा था। यही वह समय था जब वैदिक दर्शन के 'सर्वात्मवाद', 'सर्वं सा वा अयमात्मा ब्रह्म' के सिद्धान्त पर मंसूर वा हल्लाज ने स्वयं को सत् कहा। वैदिक दर्शन के चार महावाक्य -

१. तत्त्वमसि- छान्दोग्योपनिषद् ६/६/३

२. अहंब्रहमास्मि- बृहदारण्यकोपनिषद् १/४/१०

३. अयमात्मा ब्रह्म- बृहदारण्यकोपनिषद् २/५ ४. प्रज्ञानं ब्रह्म - ऐतरेयोपनिषद् ३/१/२

मन्सूर वा हल्लाज ने वैदिक दर्शन के चार महावाक्यों अर्थात् सर्वात्मवाद की धारणा के आधार पर स्वयं को सत् अर्थात् ब्रह्म मान कर 'अनल्हक' (मैं ईश्वर हूँ) कहा था, जो तसव्वुफ़ के विकास और शरा (इस्लाम का कानून) के विरोध की चरम सीमा थी। इस समय सूफ़ियों को इस्लाम धर्म संघ और इस्लाम राज्य वर्ग दोनों के विरोध का सामना करना पड़ा था। इसका कारण यह था की, सूफ़ियों ने साधना में जीव और परमात्मा के मध्य मध्यस्ता करने वाले धार्मिकों को अनावश्यक कह कर उनके महत्त्व पर आघात किया था, और शासक वर्ग के ईश्वरीय प्रतिनिधि स्वरूप को भी स्वीकार नहीं किया था।

तृतीय चरण - द्वितीय चरण में ऐसे नियम और सिद्धान्तों का समावेश भी तसव्वुफ़ में होने लगा जो इस्लाम धर्म के प्रचलित सिद्धान्तों के अनुकूल नहीं था। इस्लाम धर्म के दार्शनिकों ने सूफ़ीमत को

---

[1] सूफ़ी- काव्य- संग्रह, पृ. २० ।

[2] प. परशुराम चतुर्वेदी, सन् १९५१ ई., 'सूफ़ी-काव्य-संग्रह' तृतीय संस्करण, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृ १९

[3] प. परशुराम चतुर्वेदी, सन् १९५१ ई., 'सूफ़ी-काव्य- संग्रह' तृतीय संस्करण, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृ १६ ।

इस्लाम इतर दर्शन कहना प्रारम्भ कर दिया था। इस विवाद का निवारण करने का प्रयास तृतीय चरण में किया गया। विद्वानों ने कहा कि सूफ़ीमत किसी प्रकार भी इस्लाम से भिन्न नहीं, अपितु उसी का पोषक है।[१]

तसव्वुफ़ के बीज इस्लाम दर्शन के अनुसार परमात्मा अल्लाह ने अपने तेज से आत्मा जीव को उत्पन्न किया है। अर्थात् ईश्वर, जीव और जगत् सभी भिन्न-भिन्न हैं। अल्लाह और उसका बन्दा यहाँ तक की अल्लाह के नबी और पैगम्बर भी अल्लाह से भिन्न हैं। परन्तु तसव्वुफ़ विचार धारा ने जीव और जगत् को भी ब्रह्म मान लिया। इस्लाम धर्म से प्रसूत सूफ़ियों के इस नवीन सम्प्रदाय में सर्वात्मवाद के सिद्धान्त के कारण परम तत्त्व के लिये इतनी व्यापकता हुई कि सृष्टि के कण-कण में उन्हें अल्लाह नज़र आने लगे, जब सर्वत्र ब्रह्म है तो बुत में भी ब्रह्म का होना अनिवार्य हो गया, जो इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों के विरुद्ध धारणा है।

कुरान में वर्णित ईश्वर- कुल हु वल्लाहु अहह अल्ला हुस्समद लम यलिद व लम यूलद
वलमयकुल लहू कुफफवन अहद।[२]

कहो! अल्लाह एक है, बिल्कुल अकेला। अल्लाह सभी से निरपेक्ष है, और सभी उसके मोहताज हैं, न उसकी कोई सन्तान है, और ना ही वह किसी की सन्तान है, और उसका कोई समकक्ष नहीं है।

कुरान केवल एक ही अल्लाह पर विश्वास करने का वर्णन बार बार करता है। वेद में भी एक ही ईश्वर का वर्णन अनेक मन्त्रों में है। जैसे -

यो देवानां नामधा एक एव (यजुर्वेद १७/२७)
तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः॥ (यजुर्वेद ३२/१)

न द्वितीयो न तृतीयष्चतुर्थो नाप्युच्यते। न पञ्चमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते। स एष एक एकवृदेक एव॥ (अथर्ववेद)

मूलरूप से वेदों में सर्वत्र अत्यन्त विशुद्ध रूप से एकेश्वरवाद का प्रतिपादन है - **"एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः"** ऋग्वेद १/१६४/४६, कुरान शरीफ में भी यही सिद्धान्त हैं।

परमात्मा और आत्मा का रागात्मक सम्बन्ध सूफ़ीमत की विशेषता है। सूफ़ीमत हो या इस्लाम धर्म अरब से सीधे भारत देश नहीं पहुँचा था। सूफ़ीमत अरब से ईरान और ईरान से भारत देश पहुँचा था। इसको प्रस्थानत्रय कहा जाता है। इस मत को अरब ने ज्ञान मार्ग दिया, ईरान ने प्रेम के आधार पर

---

[१] प. परशुराम चतुर्वेदी सन् १९६२, 'हिन्दी के सूफ़ी प्रेमाख्यान' प्रथम संस्करण, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बम्बई, पृ. ३३ ।
[२] 'कुरान करीम' सूरह अख्लास।

भक्ति मार्ग का उपदेश दिया था। भारत ने ज्ञान और भक्ति के आधार पर कर्म मार्ग का उपदेश दिया। गीता के अनुसार मोक्ष प्राप्ति अथवा सूफ़ी पद के साधनों के रूप में क्रमशः 'ज्ञान मार्ग' 'कर्म मार्ग' और 'भक्ति मार्ग' की संज्ञा दी गई है।

सभी ईश्वरवादी दर्शन इस तथ्य पर एकमत हैं कि, ईश्वर जगत् का रचयिता होने के कारण जगत् में किसी न किसी रूप में ईश्वर अवश्य विद्यमान है। किन्तु ईश्वर और जगत् के स्वरूप के सम्बन्ध के विषय में पर्याप्त मतभेद है। इस कारण ईश्वरवादी विद्वानों नें ईश्वर और जगत् के सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। इन सिद्धान्तों में निम्न तीन सिद्धान्त मुख्य हैं।

१. तटस्थेश्वरवाद २. सर्वेश्वरवाद ३. एकेश्वरवाद

ईश्वर और जगत् तत्त्व के सम्बन्ध में सूफ़ियों के प्रधानतः तीन वर्ग हैं-

१. इजादिया २. वजूदिया ३. शहूदिया

आचार्य शङ्कर और शङ्करोत्तर अद्वैतियों ने ईश्वर और जीव के विषय में -

१. प्रतिबिम्बवाद २. अवच्छेदवाद ३. आभासवाद की अवधारणा दी है।

इजादिया... इजादिया वर्ग के सूफ़ी विद्वानों का सिद्धान्त इस्लाम धर्म का सिद्धान्त है। इनके अनुसार ईश्वर का अस्तित्व जगत् से पृथक है। इजादिया वर्ग (तटस्थेश्वरवाद) के अनुसार अल्लाह इस कायनात का इजाद करने वाला अवश्य है, किन्तु एक बार इस कायनात का इजाद करने के पश्चात् वह इसकी कार्य प्रणाली में कभी किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करता है। जिस प्रकार मनुष्य अपनी रचना से पृथक् होता है। उसी प्रकार अल्लाह यानी ईश्वर भी अपनी कृति, जगत् से पृथक और परे है। वह जगत् में अन्तर्निहित नहीं है, अर्थात् तटस्थ है। इजादिया यानी शङ्कराचार्य दर्शन के अनुसार ब्रह्म ही सत्य है, जगत मिथ्या है, और जीव ब्रह्म ही है, उससे भिन्न नहीं। "ब्रह्मसत्यं जगत्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः" ब्रह्म और आत्मा एक हैं, दोनों परम तत्त्व के पर्याय हैं। जगत् प्रपञ्च माया की प्रतीति है। जीव और जगत् मायाकृत हैं। ब्रह्म, अविद्या या माया के कारण, जीव जगत् प्रपञ्च रूप में प्रतीत होता है। सूफ़ी कहते है कि अल्लाह ने इस सृष्टि को अपनी इच्छा शक्ति से उत्पन्न किया है, और केवल वही सत् है, शेष मिथ्या है।[१] सूफ़ी हुज्वेरी ने 'कश्फ-उल-महजब' (रहस्योदघाटन) में ईश्वर और जगत् के पृथक अस्तित्व का वर्णन किया है। इस इजादिया वर्ग को शङ्कराचार्य के आभासवाद के रूप में वर्णित किया जा सकता है। इस सिद्धान्त के अनुसार ब्रह्म का माया में आभास ईश्वर और अन्तःकरण में आभास जीव है।

वजूदिया.... सूफ़ीमत का आधारभूत सिद्धान्त 'वहदतुलवजूद' अथवा अद्वैतवाद है। सूफ़ियों का मत है कि अल्लाह समस्त जगत् में व्याप्त है जो कुछ भी हम देखते हैं यह केवल उसी का वजूद

---

[१] 'कुरान करीम' सूरह यासीन।

(अस्तित्त्व) है। सूफ़ी 'मुजदिदे-अलिफ-सानी' का कथन है कि- वजूद बिल्कुल अल्लाह का ही है, और हमारे समक्ष जो जगत् है वह भी उसी की छाया हैं लेकिन वह छाया मिथ्या नहीं सत्य है, और अस्तित्त्वमान् है।[१] सर्वेश्वरवाद (वहदतुलवजूद) ईश्वर को जगत् से भिन्न न मानकर इन दोनों के पूर्ण तादात्मय का वर्णन करता है। इस वजूदिया सिद्धान्त के अनुसार ईश्वर तथा जगत् वस्तुतः एक ही हैं, इन दोनों में कोई मूल भेद नहीं है। अर्थात् ईश्वर ही सब कुछ है, और सब कुछ ईश्वर है। तटस्थेश्वरवाद (इजादिया) ईश्वर को विश्वातीत मानता है, और सर्वेश्वरवाद (वहदतुलवजूद) ईश्वर को विश्व में सर्वत्र व्याप्त मानता है। इस मत के अनुसार ईश्वर जगत् के कण कण में व्याप्त है। शङ्कराचार्य के प्रतिबिम्बवाद के अनुसार ब्रह्म का माया में प्रतिबिम्ब ईश्वर है और अविद्या में प्रतिबिम्ब जीव है। अव्यक्त शिव की व्यक्त अवस्था यह सृष्टि है।

शहूदिया.... शहूदिया वर्ग के सूफ़ियों का कथन है, कि ईश्वर इसी जगत् से परे है, किन्तु उसके सभी गुण इस जगत् में किसी दर्पण के अन्दर प्रतिबिम्ब की भाँति दृष्टिगोचर होते हैं अर्थात् जगत् की प्रत्येक वस्तु अल्लाह के होने की साक्ष्य (शहादत) देती है, इस शहूदिया सिद्धान्त को वेदान्त के सर्वात्मवाद की संज्ञा दे सकते हैं, कि ये सब खुदा की सृष्टि के तत्त्व हैं, परन्तु ये स्वयं खुदा नहीं है।[२] शहूदिया यानी एकेश्वरवाद सिद्धान्त तटस्थेश्वरवाद (इजादिया) तथा सर्वेश्वरवाद (वहदतुलवजूद) के कुछ आधारभूत मान्यताओं का खण्डन करता है, तथा कुछ मूल विशेषताओं को स्वीकार भी करता है। इस एकेश्वरवाद (शहूदिया) सिद्धान्त को तटस्थेश्वरवाद और सर्वेश्वरवाद सिद्धान्त से पूर्णतः भिन्न नहीं माना जा सकता है। तटस्थेश्वरवाद तथा सर्वेश्वरवाद के आधार पर एकेश्वरवाद का यह निष्कर्ष है की ईश्वर अन्तर्वर्ती और अतीव दोनों है। इस शहूदिया वर्ग को शङ्कराचार्य के अवच्छेदवाद के अनुसार मायाविच्छन्न अर्थात माया से सीमित ब्रह्म ईश्वर है और अविद्या अन्तःकरण विच्छन्न ब्रह्म जीव है।

शङ्कराचार्य के प्रतिबिम्बवाद के अनुसार यह सृष्टि सत्य नहीं है तथा परमात्मा एवं सृष्टि में अंश अंशी का सम्बन्ध न होकर केवल बिम्ब-प्रतिबिम्ब का सम्बन्ध है। जैसे दर्पण में प्रतिबिम्ब दृष्टिगोचर होता है, उसी प्रकार इस सृष्टि में उस ईश्वर का प्रतिबिम्ब पड रहा है। ईश्वर एक है और वह इस नामरूपात्मक जगत् में प्रतिबिम्बित हो रहा है। सृष्टि में यहाँ पर ईश्वर को बिम्ब और जीवों को ईश्वर का प्रतिबिम्ब माना गया है। जामी सूफ़ी ने अपने ग्रन्थ 'लावेह' में परम तत्त्व को दो रूपों में व्यक्त किया है, जामी ने अल्लाह को इस दृष्यमान् जगत् से नितान्त परे माना है।

---

१ निकल्सन द्वारा अनूदित, सन् १९११ ई., 'कष्फ़-उल-महजूब', लन्दन से प्रकाशित, पृ. ३०७-३०८ ।

२ 'जायसी के परवर्ती हिन्दी सूफ़ी कवि और काव्य' पृ. ३०-३१ ।

वेदान्त दर्शन में ईश्वर और जगत् के ज्ञान के लिये क्रमशः द्वैतदर्शन, अद्वैत दर्शन और विशिष्टाद्वैत दर्शन का वर्णन है। वैदिक दर्शन के समान ही सूफ़ीमत में भी ईश्वर और जगत् के ज्ञान के लिये इजादिया, वजूदिया और शहूदिया तीन सिद्धान्तों का वर्णन है। इस तथ्य से यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि सूफ़ीमत का विकास किसी न किसी रूप में वैदिक दर्शन की पूजा पद्धति के अनुसार ही हुआ होगा। इसी को प्रत्यभिज्ञादर्शन कहते हैं। इस्लामिक तसव्वुफ़ तथा योग का परस्पर सम्मिश्रण कश्मीर में तेज़ी से प्रसिद्ध हुआ था।

कुरान के अनुसार- अल्लाहुनूरू समावाते वल अर्ज अर्थात् यह जमीन और आसमान अल्लाह के नूर से ही प्रकाशित होते हैं।

अथर्ववेद के अनुसार - **'तमिदं निगतं सहः स एष एक एकवृदेक एव'**[1]

केवल वह अल्लाह एक ही, स्वयं से, बिना किसी के जन्म दिये, अकेला विद्यमान है।

श्वेताश्वर उपनिषद् के अनुसार- 'तस्य भासा सर्वमिदं विभाषते'[2]
अर्थात् सब कुछ उसके प्रकाश से प्रकाशित होता है।

वेदान्त दर्शन में साधन चतुष्टय का वर्णन है। १. अधिकारी, २. विषय, ३. सम्बन्ध, ४. प्रयोजन इस्लाम दर्शन में भी ईश्वर की प्रशंसा तस्वीह के लिये १. नमाज, २. रोजा, ३. ज़कात और ४. हज साधनचतुष्टय का वर्णन है। कल्मा साधन चतुष्टय से पूर्व की अवस्था है, जो खुदा के एक होने पर विश्वास है। यह शिव की परा अवस्था को इंगित करता है। परमात्मा सूफ़ियों को प्रिय है, जिसके लिये उसके हृदय में उत्कट व्याकुलता रहती है। वे मानवीय प्रेम को ईश्वर- परम तत्त्व तक पहुँचने की सीढ़ी मानते हैं। यह सीमित प्रेम व्यापक होते होते इतना व्यापक हो जाता है कि योगी (सालिक) को सर्वत्र उसकी ही विभूति दिखाई पड़ने लगती है।

भारतीय दर्शन में ईश्वर प्राप्ति के लिये सात आसनों का वर्णन है, जिन्हें सात कमलासन कहा जाता है। सूफ़ियों के जिक्र (स्मरण) की क्रियाओं की समानता बहुत कुछ योग के प्राणायाम तथा ध्यान आदि से सामान्य हैं। जिक्र में सालिक भी साधक (योगी) के समान ध्यानस्थ होकर बैठता है। ध्यान के द्वारा सालिक अनेक प्रकार की साधनाओं द्वारा कुण्ड़लिनी का उदबोद्धन करके नाना चक्रों का भेदन करता है। सात कमलासन हैं[3]-

१. मूलाधार चक्र, २. स्वाधिष्टान चक्र, ३. मणिपुर चक्र, ४. अनाहत चक्र, ५. विशुद्धि चक्र, ६. आज्ञा चक्र, ७. सहस्राधार चक्र

---

[1] सदानन्द, सन् १९८७ ई., वेदान्तसार, 'अथर्ववेद' १३/४/२० ज्ञान प्रकाशन मेरठ, पृ. ३६ ।

[2] सदानन्द, सन् १९८७ ई., वेदान्तसार, 'श्वेताश्वरोपनिषद्' ६/१४ ज्ञान प्रकाशन मेरठ, पृ. ३६ ।

[3] स्कन्दपुराण, पूर्वभाग, ४१/५९ शिवमहापुराण पृ. ६५ । कैलाससंहिता पूर्व भाग, ४१/५७। सूफ़ीमत साधना और साहित्य, पृ. ३८६

इन सात कमलासनों चक्रों को सूफ़ीमत में क्रमशः

१. आलम-ए-फानी, २. आलम-ए-नासूत, ३. आलम-ए-लाहौत, ४. आलम-ए-साहौत, ५. आलम-ए-जबरूत, ६. आलम-ए-पुल सिरात, ७. आलम-ए-मोहल्ला (अर्श-ए-मोहल्ला)[१]

सूफ़ी और इस्लामिक साहित्य में उक्त सात आसमान होते हैं, और प्रत्येक आसमान पर वहां के पैगम्बर देवता होते हैं।

सूफ़ीमत में वर्णित आलम और वेदान्त में वर्णित चक्र को फारसी भाषा के सूफ़ी साहित्य में चरख कहते है। इस कारण इनकों चरख-ए फलक भी कहा जाता है। अर्थात् योग के चक्र या योग की अवस्थाएँ। फारसी भाषा के सूफ़ी साहित्य में इन सात चरखों (चक्रों, फलकों) के नाम इस प्रकार हैं -

१. चरख-ए-फानी, २. चरख-ए-नासूत, ३. चरख-ए-लाहौत, ४. चरख-ए-साहौत, ५. चरख-ए-जबरूत, ६. चरख-ए-पुल सिरात, ७. चरख-ए-मोहल्ला

उक्त सात चरख (चक्र,फलक) योग की सात अवस्थाएँ हैं, जो सूफ़ीमत, वेदान्त और फ़ारसी सूफ़ी साहित्य में एक समान रूप से वर्णित हैं। माया के इन चरखों के एक-एक करके उदबोद्धन होने के पश्चात् सशरीर ईश्वर के दर्शन अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होती है।

बौद्ध दर्शन का निर्वाण तसव्वुफ़ के 'फ़ना' की अवस्था है, और बका योग दर्शन के आठवें अङ्ग समाधि की अवस्था है। कश्मीर शैवमत की तुर्या अवस्था को सूफ़ीमत के फ़ना और बका की अवस्था कहा जा सकता है। यहाँ पर तसव्वुफ़ और बका एक समान रूप में परिलक्षित होते हैं।

सूफ़ी विद्वान् 'अर्ष-ए-मोहल्ला' (सहस्रार) से भी ऊपर अन्तिम अवस्था 'फ़ना' मानते हैं। 'फ़ना' बौद्ध दर्शन के निर्वाण, 'शिवमहापुराण' और पतञ्जलि 'योगसूत्र' के प्राणायाम की अन्तिम अवस्था 'समाधि' को कहा जा सकता है। 'फ़ना' अर्थात् निर्वाण की अवस्था में सालिक की आत्मा का परमात्मा में लय हो जाता है, तो उस अवस्था को सूफ़ीमत में 'बका' कहा जाता है। यह सूफ़ियों की पराकाष्टा और तसव्वुफ़ की परागति है। यह आवश्यक नहीं की 'बका' की अवस्था सालिक को मृत्यु के पश्चात् प्राप्त होती है, सशरीर बका की अवस्था योगी को प्राप्त होती है।

सालिक को सात सोपानों पर अग्रसर होते हुए परमात्मा तक पहुँचने के लिए चार मन्जिलें और चार अवस्थाएँ (परिवर्तन) प्राप्त होती हैं।

प्रथम मन्जिल - आलम-ए-नासूत (भौतिक जगत) है। इसमें साधक 'शरीयत' इस्लामी धर्म शास्त्रों का अनुसरण करता है और मोमिन कहलाता है। यह जाग्रत् अवस्था है।

---

[१] कश्मीरी और हिन्दी सूफ़ी काव्य का तुलनात्मक अध्ययन, पृ.७४ ।और देखें सूफ़ीमत साधना और साहित्य, पृ. ३८६

द्वितीय मन्जिल - आलम-ए-मलकूत (चित्र जगत्) है। जिस में वह पवित्रता का सहारा लेकर ‘तरीकत’ अर्थात् उपासना की ओर प्रवृत होता है, और सालिक कहलाता है।[१] यह ’स्वप्न’ की अवस्था है।

तृतीय मन्जिल - आलम-ए-जबरूत (आनन्दमय जगत्) है। जिस में सालिक आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करता है। इस अवस्था में वह सालिक से आरिफ़ (ज्ञानी) बन जाता है। यह मन्जिल ‘मारिफत’ की है। जिसे ‘इल्मे-ए-मारिफत’[२] अर्थात् परमात्मा का ज्ञान कहते हैं। यह ‘सुषुप्ति’ अवस्था है।

चतुर्थ मन्जिल - आलम-ए-लाहूत[३] (सत्य जगत्) है। यहाँ पर सालिक आत्मनिष्ठ हो जाता है। उसे ‘हकीकत’ अथवा सत्य की उपलब्धि होती है। यह ‘तुरियावस्था’ है।

तसव्वुफ़ विचारधारा में उक्त चार आलमों के अतिरिक्त एक और भी आलम माना है। जिसे सूफ़ी ‘हाहूत’ (रहस्य पूर्ण जगत्) कहते हैं।

भारतीय दर्शन के नरलोक, देवलोक, ऐश्वर्यलोक, और माधुर्यलोक को तसव्वुफ़ में आलम-ए-नासूत, आलम-ए-मलकूत, आलम-ए-जबरूत, आलम-ए-लाहूत नाम की चार मन्जिलों के रूप में वर्णित किया है। यहाँ पर सूफ़ियों की साधना में नाथपन्थियों की यौगिक क्रियाएँ प्रविष्ट हो गई। इन्होंने जिन मुकामातों की कल्पना की है, उनमें शरीर के अन्दर के महत्त्वपूर्ण स्थलों का नाथपन्थियों के यौगिक प्रतीकों से बहुत साम्य हैं।

प्रथम अवस्था - शरीयत अर्थात् ‘जाग्रतावस्था’ शरीयत का पालन कर्ता मोमिन है।

द्वितीय अवस्था - तरीकत अर्थात् ‘स्वप्नावस्था’ इस अवस्था को पार करने वाला ही आगे बढ़ पाता है।[४]

तृतीय अवस्था - मारिफत अर्थात् ‘सुशुप्तिवस्था’ जो सालिक मारिफत के पुल-ए-सिरात (आज्ञा चक्र) पर यात्रा करता है, वही सालिक चौथी अवस्था को प्राप्त करता है।

चतुर्थ अवस्था - हकीकत अर्थात् ‘तुरियावस्था’ इस अवस्था में सालिक ईश्वर दर्शन करता है, और स्वयं को सोऽहम् (अनल्हक) मैं ईश्वर हूँ का ज्ञान होता है। कश्मीर शैवदर्शन के अनुसार साधक इस अवस्था में ‘शिवतुल्यो जायते’[५] शिव का ज्ञान होने लगता है और शिव के तुल्य हो जाता है।

---

[१] ‘कश्मीरी और हिन्दी सूफ़ी काव्य का तुलनात्मक अध्ययन’। पृ. ७४

[२] प. राम पूजन तिवारी, सन् १९८६ ई., ‘सूफ़ीमत साधना और साहित्य’ पृ. १५१ ।

[३] ‘कश्मीरी और हिन्दी सूफ़ी काव्य का तुलनात्मक अध्ययन’ पृ. ५९ ।

[४] प. राम पूजन तिवारी, ‘सूफ़ीमत साधना और साहित्य’ पृ. १५१

[५] वसुगुप्त, सन् १९१६ ई., ‘वरदराज, शिवसूत्र विमर्शिनी’ श्रीनगर कश्मीर ग्रन्थावली। शिवसूत्र संख्या ७७ ।

तसव्वुफ़ में सात सोपानों के अतिक्रमण के अनन्तर साधक साधना करते हुए चतुर्विध सोपानों १. मारिफत (आध्यात्मिक ज्ञान) २. जुहद् (प्रेम) ३. वज्द् (उन्मादना) ४. वस्ल (ईश्वर मिलन) को प्राप्त करता है।

मारिफत में गहरी अनुभूति का अंश धारण करके जब सालिक भावापन्न हो उठता है, उसे इस आवेशावस्था में ही वास्तविक 'प्रेम' की अभिव्यञ्जना होती है। तदनन्तर उन्मादना (वज्द्) अथवा समाधि के पश्चात् साधक वस्ल (ईश्वर मिलन) के सोपान पर पहुँच जाता है। सूफ़ियों नें इन सोपानों के नाम 'मुकामात' रखे हैं।[१]

तसव्वुफ़		भारतीय दर्शन		तसव्वुफ़ और भारतीय दर्शन में सम्मिलित रूप में जगत्
१.	शरीयत अवस्था, आलम ए नासूत,	१.	जाग्रत् अवस्था, नरलोक	भौतिक जगत्
२.	तरीकत अवस्था, आलम-ए-मलकूत,	२.	स्वप्न अवस्था, देवलोक	चित्र जगत्
३.	मारिफत अवस्था, आलम ए जबरूत,	३.	सुषुप्ति अवस्था, ऐश्वर्यलोक	आनन्दमय जगत्
४.	हकीकत अवस्था, आलम ए लाहूत,	४.	तुरीय अवस्था, माधुर्यलोक	सत्य जगत्
५.	आलमे हाहूत,	५.		रहस्यपूर्ण जगत्

'मूकामात' वस्ल (ईश्वर मिलन) की इस अवस्था को सूफ़ीमत का अनुयायी ईश्वर प्राप्ति समझ लेता है, और स्वयं को भी अल्लाह का प्रतिरूप समझकर उसके स्थान पर स्वयं को स्थापित कर देता है। इस अवस्था को सालिक अनल्हक (मैं ईश्वर हूँ) कहता है। इस्लामिक दर्शन में खुद को खुदा कहने पर शिर्क हो जाता है, और सालिक शरा (इस्लामिक सिद्धान्तों) से दूर हो जाता है। तसव्वुफ़ के अनल्हक (सोऽहम्) सिद्धान्त पर वेदान्त दर्शन के चार महावाक्यों का स्पष्ट प्रभाव है। वेदान्त दर्शन का योगी, योग की भिन्न अवस्थाओं और सोपानों को पार करता हुआ इस मुकाम पर पहुँच जाता है कि उसे सभी ओर ईश्वर के दर्शन होते हैं। ईश्वर के स्वरूप और गुणों का वर्णन वेदान्त के निम्न चार महावाक्यों में प्रकार वर्णित हैं-

---

[१] जियालाल हण्डू, 'कश्मीरी और हिन्दी सूफ़ी काव्य का तुलनात्मक अध्ययन'। पृ.७४ ।

१. तत्त्वमसि - छान्दोग्योपनिषद् ६/६/३

२. अहं ब्रह्मास्मि - बृहदारण्यकोपनिषद् १/४/१०

३. अयमात्मा ब्रह्म- बृहदारण्यकोपनिषद् २/५/

४. प्रज्ञानं ब्रह्म - ऐतरेयोपनिषद् ३/१/२

उक्त चार महावाक्य वैदिक दर्शन में विशेष स्थान रखते हैं, परन्तु इस्लाम के सिद्धान्तों का स्पष्ट विरोध करते हैं। तसव्वुफ़ का सालिक इन चार महावाक्यों के प्रभाव के कारण ही स्वयं को खुदा कहता है, अन्यथा इस्लाम धर्म में तो आत्मा और परमात्मा, परमात्मा और जगत्, जगत् और आत्मा भिन्न-भिन्न तत्त्व हैं।

कश्मीर शैव दर्शन के अनुसार योगी मलत्रय आणवमल, मायीयमल, कार्ममल के बन्धन से रहित गुरु के द्वारा कहे गए उपायों का पालन करके शिव के समान हो जाता है। पशु, पाश, पति। पशु योगी, पाश बन्धन से रहित जब होता है तो वह पति शिव का ही रूप होता है। वसुगुप्त के शिवसूत्र 'शिवतुल्यो-जायते' अर्थात् योगी सच्चिदानन्द शिव के समान हो जाता है इस अवस्था में योगी को शिवोऽहम् का वोध होता है, पशु, पशु से पशुपति बन जाता है।

परन्तु इस्लामिक दर्शन में ऐसा नहीं होता - कुरान में अल्लाह ने अनेक स्थानों पर कहा है कि मेरे (अल्लाह) साथ किसी को भी शामिल मत करो। अल्लाह सभी को क्षमा कर देगा लेकिन अल्लाह के साथ किसी को शामिल करने वाले अर्थात् शिर्क करने वाले को कभी भी क्षमा नहीं करेगा।

सूफ़ीमत की. क्रिया पद्धति पर इस्लामेतर दर्शनों का न्यून-अधिक समानताओं उनका प्रभाव अवश्य पड़ा था। परन्तु तसव्वुफ का स्वरूप हमेशा इस्लामी ही रहा, भले ही उसकी चिन्तन पद्धति का विकास किसी भी रूप में हुआ हो। सूफ़ियों की दार्शनिकता का मूल आधार कुरान और हदीस ही रहा था। सूफ़ियों नें कुरान की नवीन व्याख्या व्यावहारिक स्तर पर कुरान की सीमाओं में रहकर ही की थी। सूफ़ी चिन्तकों ने किसी भी स्थान पर कभी भी कुरान और हदीसों अर्थात् इस्लाम का विरोध नहीं किया, कुरान के अनुसार ही सूफ़ीमत की दार्शनिक विकासधारा का विकास हुआ।

डॉ. वाहिद नसरू
वरिश्ठ सहायक प्रवक्ता, (संस्कृत)
मध्य एशियाई अध्ययन केन्द्र,
कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर
जम्मू और कश्मीर, भारत